आचार्य शिवप्रसाद सिंह राजभर "राजगुरु"

बेताल पचीसी – जल संरक्षण समिति की अध्यक्ष

सम्राट विक्रमादित्य ने पेड़ की डाल पर उल्टा लटके बेताल को पकड़ा और अपने कंधे पर लादकर चल पड़े। बेताल आज बिल्कुल चुपचाप था। सम्राट विक्रमादित्य उसे कंधे पर लादे आगे बढते जा रहे थे। जब काफी समय बीत गया तब सम्राट विक्रमादित्य ने कहा-बेताल! क्या बात है आज तुम बिल्कुल चुपचाप हो? तब बेताल ने कहा-हे राजन! मेरे मस्तिष्क में बहुत सी बातें उमड़-घुमड़ रही हैं। जिस तरफ भी नजर डालो एक न एक नई कथा नजर आती है। कोई कथा सुखद है और कोई कथा दुःखद। हर आदमी अनगिनत कथाओं का पुतला है। हर आदमी यदि अपने जीवन की घटनाओं-दुर्घटनाओं को लिपिवद्ध करे तो हर आदमी का अपना महाउपन्यास या महाकाव्य होगा। जिसे व्यक्ति मामूली बात समझकर नजरन्दाज कर देता है वह बात कितनी महत्वपूर्ण है वह खुद नहीं जानता। बस मैं सुनाता हूँ, आप सुनते हैं और उसका सटीक उत्तर प्रस्तुत करते हैं। लेकिन हमारा आपका यह संवाद जब लोग समझें तब ही आपका और मेरा मकसद पूर्ण होगा। हे! राजन बहरहाल मैं आपको एक मामूली सी बात आपके सामने बता रहा हूँ। हां एक बात और मैं आपको बता दूँ, अभी तक मैंने आपको जितनी भी कथाएं बताईं और आपने उनका समुचित उत्तर प्रस्तुत किया वे सब कपोल-कल्पित नहीं हैं। इस धरातल की सत्य कथाएं हैं।

खैर! सुनिए मैं आज आपको एक कथा सुनाता हूँ। बात एक नगरपालिका की है। एक व्यक्ति नगरपालिका के वार्ड नम्बर दो के पार्षद को तलाश रहा था। वह व्यक्ति प्रदेश से बाहर से आया था। किसी गणमान्य व्यक्ति से उसे मिलना था। उस गणमान्य व्यक्ति ने उसे पता दिया था कि जब वह इस शहर में आये तो वार्ड नम्बर दो की पार्षद का मकान पूछ ले, कोई परेशानी नहीं होगी। उस व्यक्ति ने बस से उतरकर एक चायवाले से पूछा-भैया वार्ड नम्बर दो की पार्षद का मकान कहां पर है? चाय वाले ने उस व्यक्ति को ऊपर से नीचे तक देखा और फिर बोला-अच्छा तो आप नगरपालिका की जल संरक्षण समिति की अध्यक्ष के मकान का पता पूछ रहे हो। उस व्यक्ति ने कहा-भैया मुझे तो यह मालूम नहीं है कि वे जल संरक्षण समिति की अध्यक्ष हैं अथवा नहीं, जिन महान आत्मा से मुझे मिलना है उन्होंने यही कहा था कि मैं वार्ड नम्बर दो की पार्षद का मकान पूछ लूंगा वे वहीं मिल जायेंगे। चाय वाले ने कहा कि आप इस डाकखाना वाले रोड पर चले जाइये। आगे बाईं ओर जो पुलिया है उस पुलिया में मुड़ जाइये। रास्ते में कुछ नल मिलेंगे। लेकिन जिस नल में टोंटी नहीं है और तेज रफ्तार से नल बह रहा होगा, वह नल उन्हीं का है, वही मकान वार्ड नम्बर दो की पार्षद गुनीतासिंह जी का है। वहीं मकान की दीवाल पर उनकी नेम प्लेट भी लगी हुई है। चाय वाले से इतनी जानकारी मिलने पर वह व्यक्ति डाकघर रोड पर आगे बढ़ गया। चाय वाले की दुकान से आगे एक बेन्च पर एक महात्मा टाइप सज्जन बैठे हुए थे। उनका मुंह चाय वाले की दुकान से बिल्कुल विपरीत दिशा में था अतएव चाय वाले ने उन्हें नहीं देखा था किन्तु उन सज्जन ने चाय वाले व्यक्ति एवं उस व्यक्ति के बीच हुए संवाद को सुन लिया था। चाय वाले ने उस राहगीर को समझाते हुए जब यह कहा कि-"रास्ते में कुछ नल मिलेंगे। लेकिन जिस नल में टोंटी नहीं है और तेज रफ्तार से नल बह रहा होगा, वह नल उन्हीं का है, वही मकान वार्ड नम्बर दो की पार्षद गुनीतासिंह जी का है। तब उस सज्जन के चेहरे का रंग फीका पड़ गया था, रंग उड़ गया था। चेहरा गहरी वेदना से भर गया था। वह उठे और घर की ओर चल पड़े। आगन्तुक व्यक्ति आगे निकल चुका था।

बेताल ने सम्राट विक्रमादित्य से पूछा-हे! राजन इतनी सी सामान्य बात पर उन सज्जन का चेहरे का रंग क्यों फीका पड़ गया, आप इस पर सही-सही प्रकाश डालिए। सही प्रकाश न डालने अथवा सही विवरण ने देने का परिणाम आप भलीभांति जानते हैं।

सम्राट विक्रमादित्य ने कहा-हे! बेताल दरअसल वह व्यक्ति अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महान समाजसेवी, महान साहित्यकार श्री यशवन्तसिंह जी थे और वार्ड नम्बर दो की पार्षद गुनीतासिंह उनकी पुत्र-वधू थी। चाय वाले ने जिस तरह पार्षद

व्यर्थ ना करें जल, वरना मुश्किल होगी कल।

का पता बिना टोंटी के बहते हुए नल का जिक्र करते हुए बताया था उन्हें बहुत आघात लगा था। उनकी पुत्रवधु गुनीतासिंह मात्र कक्षा आठ तक पढ़े हुए हैं। संयोगवश श्री यशवन्तसिंह जी की प्रतिष्ठा के कारण वह चुनाव जीत गई और नगरपालिका में जल संरक्षण समिति की अध्यक्ष भी बन गई। बहते हुए बिन टोंटी के नल को लेकर श्री यशवन्तसिंह जी ने कई बार उसे समझाया भी दी, अपने जीवन में घटी घटनायें सुनाई किन्तु उसने हमेशा श्री यशवन्तसिंह जी को जवाब दिया-"बाबूजी आप भी क्या छोटी छोटी बातों पर मुझे डांटते रहते हैं। मैं नगरपालिका की जल संरक्षण समिति की अध्यक्ष हूं आप तो कभी कोई चुनाव लड़े नहीं, कहीं किसी पद पर रहे नहीं तब इस सबके विषय में आप क्या जानें।" श्री यशवन्तसिंह बहू की इन बातों को सुनकर अपना मुंह लिए रह जाते। अपने बेटे को भी उन्होंने कहा कि वह बहू को समझाये किन्तु बहू शेरनी तो बेटा सवा शेर। श्री यशवन्तसिंह जी बहू-बेटे को अन्न, जल, हवा, पेड़ पौधे पर्यावरण आदि के विषय में समझाने की बहुत चेष्टा करते किन्तु परिणाम वही ढाक के तीन पात। उन्होंने कहा कि हम सबका कर्तव्य है कि अन्य वस्तुओं की तरह जल, शुद्ध हवा आदि आने वाली पीढ़ी को सुपुर्द करके जायें किन्तु बहू बेटे इसे बूढ़े का प्रलाप समझकर नजरन्दाज कर देते। आज उन्हें बहुत सदमा लगा जब उनकी पार्षद बहू का पता पानी को बर्बाद करने वाली महिला के रूप में दिया गया। एक ज्ञानी पुरूष "दिया तले अंधेरा" के मुहावरे से पूरी तरह आप्लावित था।

सम्राट विक्रमादित्य का इस प्रकार विवरण सुनकर बेताल पुनः उनके कंधे से छिटककर पेड़ की डाल पर जा लटका।

संपर्क करें:
आचार्य शिवप्रसाद सिंह राजभर "राजगुरू"
आनन्द भवन, सिहोरा, जबलुपर (म.प्र.)–483 225
मो.नं. 9424767707
ईमेल : rajguruacharyashivprasadsinghr@gmail.com